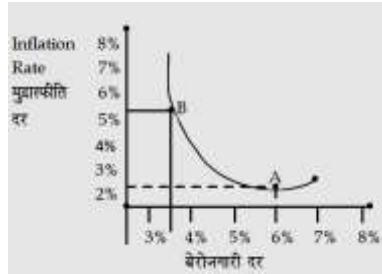


मुद्रास्फीति (Inflation)

- यह एक परिस्थिति है, जिसमें वस्तु और सेवाओं की कीमतें बढ़ती हैं तथा मुद्रा का मूल्य कम होता है जिससे मुद्रा की क्रय शक्ति भी कम हो जाती है।
- फिलिप्स वक्र :-** यह वक्र मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच नकारात्मक संबंध दर्शाता है। मुद्रास्फीति के बढ़ने से बेरोजगारी कम होती है।



- मुद्रास्फीति व बेरोजगारी के बीच यह संबंध सदैव सत्य नहीं होता है। एक निश्चित समय सीमा तक ही यह संबंध देखा जाता है।
- मुद्रास्फीति की गणना प्रत्येक माह की जाती है परन्तु कीमतों की तुलना पिछले साल के उसी माह की कीमतों से की जाती है; जैसे-माह

Month	2024	2025	मुद्रास्फीति
Jan	100	110	10%
Feb	100	108	8%
Mar	100	90	-10%
April	100	105	5%
May	100	102	2%
June	100	90	-10%
July	100	80	-20%

मुद्रास्फीति के प्रकार

- लक्षित मुद्रास्फीति** — प्रत्येक देश के द्वारा अपनी विकासात्मक आवश्यकताओं के आधार पर मुद्रास्फीति का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है जिसे लक्षित मुद्रास्फीति कहा जाता है।
 - विकसित देशों में मुद्रास्फीति का लक्ष्य (1%-2%) के बीच होता है, क्योंकि वे मुद्रास्फीति के नकारात्मक प्रभावों से बचना चाहते हैं।
 - विकासशील देशों के लिए यह $4\% \pm 2\%$ है। इस मुद्रास्फीति को ग्रोथ इनफ्लेशन भी कहा जाता है क्योंकि विकासशील देशों का मुख्य उद्देश्य रोजगार के अवसर सृजित करना है।
- रेंगती मुद्रास्फीति** :- जब मुद्रास्फीति की दर 3% से कम होती है। यह मुद्रास्फीति विकसित देशों के लिए सकारात्मक है परंतु विकासशील देशों के लिए अच्छी नहीं है।
- चलती मुद्रास्फीति** :- जब मुद्रास्फीति की दर 3%-6% के बीच होती है। यह मुद्रास्फीति विकसित देशों के लिए नकारात्मक है परंतु विकासशील देशों के लिए सकारात्मक है।
- दौड़ती मुद्रास्फीति**:- जब मुद्रास्फीति की दर 6%-10% के बीच होती है। यह मुद्रास्फीति विकसित और विकासशील दोनों देशों के लिए चिंताजनक है।
- गेलोपिंग मुद्रास्फीति** :- जब मुद्रास्फीति की दर 10% से अधिक होती है यह मुद्रास्फीति अत्यधिक चिंताजनक है। इसे नियंत्रित करने के लिए अप्रत्याशित उपाय अपनाये जाते हैं।
- हाइपर मुद्रास्फीति** :- जब मुद्रास्फीति की दर 50% से भी अधिक हो जाती है। यह मुद्रास्फीति का सबसे खतरनाक स्वरूप है। इसमें मुद्रा व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो जाती है।
- विस्फीति**:- जब मुद्रास्फीति की दर कम होने लगती है यद्यपि कीमतें अभी भी अधिक होती है।

(8) **अवस्फीति:**— जब मुद्रास्फीति की दर नकारात्मक हो जाती है अर्थात् वस्तु और सेवाओं की कीमतें कम हो जाती हैं। इससे उत्पादकों को नुकसान होता है जिससे उत्पादन कम हो जाता है तथा अर्थव्यवस्था मंदी में चली जाती है। यदि यह स्थिति कुछ समय के लिए बनी रहे तब अर्थव्यवस्था महामंदी में चली जाती है।

9. **स्टेगफ्लेशन :-** यह एक विशेष परिस्थिति है जिसमें ळक् कम होती है, बेरोजगारी बढ़ती है परन्तु फिर भी मुद्रास्फीति अधिक होती है।

• यह केन्द्रीय बैंक के लिए दुविधा की स्थिति है क्योंकि यदि ब्याज दरों को बढ़ाया जाता है तब ळक् में और अधिक कमी होगी; और, यदि ब्याज दरों को कम किया जाता है तब मुद्रास्फीति बढ़ेगी।

(10) **कोर मुद्रास्फीति:**— यह मुद्रास्फीति का वह भाग है जो केन्द्रीय बैंक के नियंत्रण में होता है।

कोर मुद्रास्फीति = मुद्रास्फीति – अन्य कारक

अन्य कारकों में शामिल हैं—

- अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें।
- प्राकृतिक घटनाएं।
- परिवहन में बाधा।

प्रचलित रूप से —

कोर मुद्रास्फीति = हेडलाइन मुद्रास्फीति— खाद्य पदार्थ एवं ईंधन मुद्रास्फीति

11. **लागत जनित मुद्रास्फीति:** यह मुद्रास्फीति लागत बढ़ने के कारण उत्पन्न होती है। लागत निम्नलिखित कारणों से बढ़ सकती है—

- कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि।
- किराये में वृद्धि।
- मजदूरी की दरों में वृद्धि।
- ब्याज दरों में वृद्धि।
- उद्यमी के लाभ में वृद्धि।
- कच्चे माल की उपलब्धता में कमी।
- जैसे — प्राकृतिक आपदा के कारण।
- परिवहन की लागत में वृद्धि।
- जैसे— अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि।
- अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि।

12. **माँग जनित मुद्रास्फीति:**— यह मुद्रास्फीति माँग में वृद्धि के कारण होती है। माँग में वृद्धि निम्नलिखित कारणों से हो सकती है—

- बाजार में तरलता में वृद्धि:— ब्याज दरों में कमी, नई मुद्रा के सृजन के कारण।
- जनसंख्या में वृद्धि।
- सरकारी खर्च में वृद्धि।
- बाजार में काला धन
- आय के स्तर में वृद्धि।
- सरकार के द्वारा प्रत्यक्ष करों में कमी
- विदेशी निवेश में वृद्धि।

13. **तिरछी मुद्रास्फीति:**— जब कुछ वस्तुओं की कीमतें अत्यधिक बढ़ जाती हैं तथा अन्य वस्तुओं की कीमतें स्थिर रहती हैं तो ऐसी मुद्रास्फीति को तिरछी मुद्रास्फीति कहते हैं। जैसे— प्रोटीन मुद्रास्फीति (प्रोटीन उत्पादों की कीमतों में वृद्धि)

14. **Shrink Inflation:**— जब कीमतें स्थिर रहती हैं परन्तु उत्पाद की गुणवत्ता और मात्रा में कमी कर दी जाती है।

15. **Bottleneck Inflation :-** जब आपूर्ति में बाधाओं के कारण कीमतें बढ़ती हैं।

16. **Imported Inflation:** — जब आयात की जाने वाली वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो जाती है।

मुद्रास्फीति की गणना:— मुद्रास्फीति की गणना दो दृष्टिकोणों से की जा सकती है—

- थोक मूल्य सूचकांक (Wholesale Price Index- WPI)
- उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

WPI	CPI
वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रकाशित आर्थिक सलाहकार कार्यालय द्वारा जारी • WPI के चार प्रकार होते हैं— (i) WPI प्राथमिक वस्तुएँ = 117 (ii) WPI ईंधन और ऊर्जा = 16 (iii) WPI विनिर्मित वस्तुएँ = 564 (iv) WPI मुख्य = 697 • WPI की गणना केवल पूरे भारत के लिए की जाती है। क्षेत्रीय WPI की गणना नहीं की जाती है। • केवल वस्तुएँ शामिल हैं। • खाद्य पदार्थों का भारांश (लगभग 20%) बहुत कम है। • आधार वर्ष = 2011-12 • प्रत्येक माह के 14 वें दिन जारी किया जाता है।	• सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित। • राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा जारी। • CPI के तीन प्रकार होते हैं— i. CPI ग्रामीण ii. CPI शहरी iii. CPI (ग्रामीण + शहरी) • CPI देश के साथ राज्यों और U.T. के लिए भी जारी किया जाता है अर्थात् क्षेत्रीय CPI जारी किया जाता है। • वस्तुएँ (308) एवं सेवाएँ (50) दोनों शामिल हैं। • खाद्य पदार्थों का भारांश (36.75%) सर्वाधिक है। • आधार वर्ष = 2024 • प्रत्येक माह के 12वें दिन जारी किया जाता है।

2014 तक यह मुख्य सूचकांक था।

- 2014 से यह मुख्य सूचकांक है। (उर्जित पटेल समिति की सिफारिश पर)

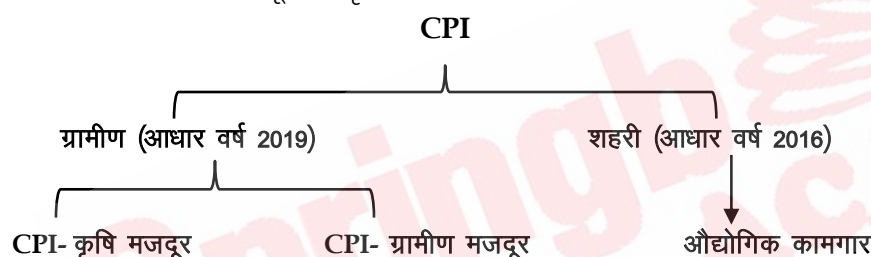
Note: CPI(आधार वर्ष 2024) के प्रमुख बिन्दू

1. CPI(आधार वर्ष 2024) की गणना—

- 6 समूह के बजाय 12 प्रभाग(Division) में विभाजित
- ग्रामीण बाजार = 1465
- शहरी बाजार = 1407
- 25 लाख से अधिक आबादी वाले 12 शहरों में ई-कॉमर्स बाजारों का डेटा भी शामिल।
- 2. आधार वर्ष में परिवर्तन घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES), 2023-24 के आधार पर किया गया।
- 3. घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES), 2023-24 के आधार पर विभिन्न प्रभागों को भारांश तय किया गया है—
 - घरेलू खर्च में भोजन की हिस्सेदारी में गिरावट
 - आवास, सेवाओं और परिवहन संबंधी वस्तुओं के महत्व में वृद्धि।
- 4. संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग के COICOP-2018 (उद्देश्य के अनुसार व्यक्तिगत उपभोग वर्गीकरण) को अपनाया गया है; इसके लाभ हैं—
 - वस्तुओं का उनके उपयोग के अनुसार वर्गीकरण आसान।
 - भारत के CPI की वैश्विक तुलनात्मकता सुनिश्चित होगी।
- **CPI गणना में शामिल नए मद:** ग्रामीण आवास किराया, ऑनलाइन मीडिया और स्ट्रीमिंग सेवाएँ, ऑनलाइन शॉपिंग, मूल्य संवर्धित डेयरी उत्पाद, बाह्य हार्ड डिस्क, पेन ड्राइव आदि।

Note:-

- ❖ राज्य सरकार के द्वारा अलग से WPI जारी किया जाता है। राजस्थान में इसका आधार वर्ष 1999-2000 है।
- ❖ एक अन्य CPI मजदूरों के दृष्टिकोण से भी जारी किया जाता है।



$$\text{GDP Deflator} = \frac{\text{Nominal GDP}}{\text{Real GDP}} \times 100$$

Nominal (नाममात्र) GDP = प्रचलित कीमतों पर गणना की गई GDP (मुद्रास्फीति का प्रभाव शामिल)

Real (वास्तविक) GDP = स्थिर कीमतों पर गणना की गई GDP (मुद्रास्फीति का प्रभाव शामिल नहीं)

- GDP Deflator मुद्रास्फीति का संकेतक है,
- यह उपभोक्ता मूल्य सूचकांक व थोक मूल्य सूचकांक से अधिक सटीक है। परन्तु यह अधिक प्रचलित नहीं है, क्योंकि इसकी गणना में अधिक समय लगता है।
- **उत्पादक मूल्य सूचकांक :-** इसका प्रयोग यूरोपीय देशों में किया जाता है। इसमें उत्पादक के दृष्टिकोण से कीमतों में वृद्धि की गणना की जाती है इसमें वस्तु और सेवा दोनों को शामिल किया जाता है।
- **आधार प्रभाव :-** मुद्रास्फीति की गणना पर पिछले वर्ष की कीमतों का प्रभाव देखा जाता है, जिसे आधार प्रभाव कहा जाता है। यदि पिछले वर्ष कीमतें अधिक थी तो वर्तमान वर्ष में कम मुद्रास्फीति देखी जायेगी तथा यदि पिछले वर्ष कीमतें कम थी तो वर्तमान वर्ष में अधिक मुद्रास्फीति देखी जायेगी।

मुद्रास्फीति के प्रभाव

1. सकारात्मक प्रभाव :

- निवेश में वृद्धि
- GDP में वृद्धि
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि
- सरकार की कर आय में वृद्धि

2. नकारात्मक प्रभाव :

- मुद्रा की क्रय शक्ति कम हो जाती है।
- बचतकर्ता को हानि होती है।
- मुद्रास्फीति के कारण ऋण देने वाले को हानि होती है तथा ऋण लेने वाले को लाभ होता है क्योंकि—
प्रभावी ब्याज दर = ब्याज दर – मुद्रास्फीति
- बैंकों से जमाकर्ता धन निकालने लगते हैं तथा दूसरे क्षेत्रों में निवेश करने लगते हैं, जिसके कारण उनका जोखिम बढ़ जाता है।
- बैंक की ऋणयोग्य राशि कम हो जाती है जिसके कारण निवेश और माँग प्रभावित होती है।
- मुद्रास्फीति के कारण और अधिक मुद्रास्फीति बढ़ती है।
- मुद्रास्फीति के कारण सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न होती है जिससे निवेश प्रभावित होता है।
- कालाबाजारी की प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं।
- मुद्रास्फीति का सबसे नकारात्मक प्रभाव गरीब परिवारों पर होता है क्योंकि उनके लिए जीवन यापन की लागत बढ़ जाती है।
- असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को नुकसान होता है क्योंकि उन्हें महँगाई भत्ता नहीं दिया जाता है।
- जो लोग संगठित क्षेत्र में काम करते हैं, उन्हें महँगाई भत्ता दिया जाता है, लेकिन इससे उनकी कर योग्य आय बढ़ जाती है। इस अवधारणा को राजकोषीय कर्षण (Fiscal Drag) कहा जाता है।
- सरकारी खर्च में वृद्धि होती है जिसके कारण राजकोषीय घाटा बढ़ जाता है।
- मुद्रास्फीति के कारण आयात बढ़ते हैं तथा निर्यात कम होते जाते हैं जिसके कारण व्यापार घाटा बढ़ जाता है।

मुद्रास्फीति को नियन्त्रण करने के उपाय:-

मौद्रिक उपाय (RBI के द्वारा)

- ब्याज दरों में वृद्धि
- नयी मुद्रा के सृजन में कमी
- CRR व SLR में वृद्धि
- गुणात्मक उपाय अपनाये जाते हैं।

राजकोषीय उपाय (सरकार के द्वारा)

1. आपूर्ति में वृद्धि की जायेगी—

- आयात में वृद्धि
- निर्यात पर नियंत्रण
- घरेलू उत्पादन में वृद्धि
- कालाबाजारी पर नियंत्रण।

2. मांग में कमी की जायेगी—

- सरकारी खर्च में कटौती
- प्रत्यक्ष कर में वृद्धि
- काला धन के विरुद्ध कार्यवाही।

प्रत्यक्ष हस्तक्षेप

- अप्रत्यक्ष करों में कमी
- सब्सिडी में वृद्धि
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से।